किया जाय जिस पर यह जाति गर्व कर सकती है। यद्यपि पूर्व में मैं अपने "दशोरा जाति इतिहास एवं परिचय" में काफी जानकारी दे चुका हूँ किन्तु इसमें कुछ विशेष सामग्री एवं वर्तमान की स्थिति का वर्णन किया गया है जो उपयोगी है तथा भविष्य में भी इसकी उपयोगिता बनी रहेगी। इस कार्य में श्री हरिशंकर जी दशोरा का काफी सहयोग रहा तथा श्री यमुना शंकर जी दशोरा (कांकरोली) तथा डा. नरेन्द्र कुमार जी दशोरा (सेक्टर 3 –उदयपुर) ने इसे पढ़कर उचित मार्ग दर्शन दिया अतः इनके प्रति मैं अपना आभार प्रदर्शित करता हूँ। श्री हरिशंकर जी दशोरा तथा श्री चतुर्भुज जी दशोरा ने इसके प्रकाशन में सहयोग दिया जिससे मुझे काफी सहायता मिली। धन्यवाद

जन्माष्ठमी नन्दलाल दशोरा

दिनांक 16-8-2006 लेखक

OOOOOOOOO

स्वर्ण वाक्य

- ❑ प्रत्येक मनुष्य वास्तव में ईश्वर है, पर वह मूर्खों जैसा व्यवहार कर रहा है। (इमर्सन)
- ❑ लेखकों की स्याही शहीदों के खून के कतरो से ज्यादा पाक है। (हजरत मोहम्मद)
- ❑ दैव मूर्ख लोगों की कल्पना है। बुद्धिमान लेाग पुरूषार्थ द्वारा उन्नति करके अच्छे पद प्राप्त करत हैं। (योग वाशिष्ठ)
- ❑ अनाड़ी के हाथों पड़कर हीरा भी अपेक्षित होता है। (अज्ञात)
- ❑ जवानी एक खिला हुआ फूल है तो वृद्धावस्था एक पका हुआ रसदार मधुर फल है जिसका स्वाद निराला ही हैं किन्तु जिसे इसका स्वाद लेना नहीं आया वही इसे कोसता रहता है। (अज्ञात)

सम्पादक के कलम से

किसी जाति अथवा समाज का अतीत, वर्तमान के लिए दर्पण का कार्य करता है तथा भविष्य की सम्भानाओं को अभिव्यक्त करता है। दशोरा (ब्राह्मण) समाज का अतीत अत्यन्त गौरवशाली रहा है। इस जाति ने अनेक शिक्षाविद्, शिक्षा अधिकारी, शिक्षक, इतिहासज्ञ, न्यायविद्, लेखक, साहित्यकार, आध्यात्मिक चिन्तन शील, आरक्षी–अधिकारी, प्रशास्तिकार, पुरातत्ववेत्ता, प्रशासनिक – अधिकारी, ज्योतिर्विद्, इंजीनियर, डाक्टर एवं कवि प्रदेश एवं देश को प्रदान किये हैं, जिन्होंने अपनी निष्ठा, कार्य–कुशलता, दक्षता एवं कर्त्तव्यपरायणता के फलस्वरूप अपनी अलग से पहचान बनाई है; इस दृष्टि से दशोरा (ब्राह्मण) जाति अपनी विद्वता एवं दायित्त्व – निर्वहन की दृष्टि से सर्वत्र सम्मान की पात्र बनी है।

देश – काल एवं परिस्थिति के अनुसार दशोरा जाति के रीति रिवाजों, रहन – सहन एवं परम्पराओं में स्वभाविक रूप से परिवर्तन हुए हैं, किन्तु परिवर्तनों की इस आँधी में कहीं हम अपने मूल से तो विलग नहीं होते जा रहे हैं ? क्योंकि जो जातियाँ अपने मूल को विस्मृत कर देती हैं, वे अपने अस्तित्व को ही खो देती हैं। अतः परिवर्तनों केइस अन्धे दौर में हमें अपने मूल से जुड़ा रहकर अपने अस्तित्व का परिरक्षण करना एक बड़ी चुनौती है।

श्रद्धेय श्रीमान् नन्दलाल जी दशोरा ने, प्रस्तुत–पुस्तक के माध्यम से दशोरा (ब्राह्मण) जाति को उसके गौरवमय अतीत का स्मरण करा, अपने मूल से जुड़े रहने की प्रेरणा दी है। इस दृष्टि से यह पुस्तक मनन करने योग्य सिद्ध होगी। हमें अपने गरिमामय अतीत को स्मरण कर, वर्तमान में की जाने वाली भूलों से बचना होगा ताकि हम भावी पीढ़ी को सुसंस्कारित कर देश प्रदेश में पुनः उसे सम्मानित एवं प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करने के योग्य बना सकें।

यमुनाशंकर दशोरा
काँकरोली